## गुप्तधन के संकेत

एक बहुत ही धनवान परिवार के एक युवक ने कुपथ पर अग्रसर होकर अपने बाप-दादा की कमाई हुई अगाध सम्पत्ति पूरी तरह से नष्ट कर दी। अन्त में ऐसी अवस्था हुई कि एक बेला के खाने के लिए भी बहुत कष्ट उठाना पड़ा, ऊधारी चुकाते-चुकाते उसकी बहुत ही बुरी अवस्था हो चुकी थी। दूसरी ओर महाजनों का दुर्व्यवहार और अत्याचार से उसका जीना दूभर हो गया था। इस समस्या से मुक्ति का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उसकी एकमात्र चिन्ता थी कि किस प्रकार इस समस्या का समाधान मिले। उसने सबसे जिज्ञासा करना शुरू कर दिया : ''भाई, किस प्रकार मुझे उद्धार मिलेगा, जरा बताओ।'' सबने उसे विभिन्न प्रकार के उपदेश दिए। किसीने कहा रोजगार करो, किसीने कहा व्यवसाय करो, किसी ने कहा ईश्वर की आराधना करो और किसीने योग-ध्यान करने का परामर्श दिया। किन्तु किसी की भी बात उसके मन को नहीं भायी। एक दिन उसके मन में आया कि मेरे बाप-दादा तो बहुत धनवान थे, एकबार उनके द्वारा लिखे हुए खातों को अच्छी तरह से देख लेना चाहिए, शायद उन खातों में किसी का कुछ उधार बाकी हो तो उस पैसे से कुछ दिन का गुजारा हो जाएगा, चिन्ता थोड़ी सी कम हो जाएगी।

उसके पुरखों के खातों का निरीक्षण करने पर उसे एक जगह पर यह लिखा हुआ मिला: ''किसी एक जगह पर एक शिव मन्दिर की प्रतिष्ठा की गई है। उस शिव मन्दिर के अग्र भाग (गुम्बज) में बहुत धन-रत्न रखा हुआ है। कार्तिक महिने के पूर्णिमा तिथि के अवसर पर दोपहर के समय वहाँ खोजने पर वह गुप्तधन मिलेगा । '' निर्दिष्ट दिन पर निर्दिष्ट समय पर उसने मन्दिर के अग्रभाग को तोड़ दिया। परन्तु उसे कुछ भी नसीब नहीं हुआ। वहाँ तो धन-रत्न का कोई चिह्न ही नहीं था। वह सोचने लगा कि उसके बाप-दादा कितने बड़े मिथ्यावादी थे। अगर उनका बोलना सच था तो उसे गुप्तधन क्यों नहीं मिला, धन तो दूर की बात उसने अनर्थक मन्दिर तोड़ दिया। इस हताश अवस्था के बारे में सोचते-सोचते उसके आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

उस समय एक साधु वहाँ से जा रहे थे। युवक को रोते हुए देख उन्होंने जिज्ञासा किया : ''बच्चे, क्यों रो रहे हो? क्या हुआ है तुम्हारे साथ?''

युवक ने कहा : ''बाबा, मेरे बाप-दादा के खाते में लिखा है कि मन्दिर के अग्रभाग में गुप्तधन जड़ित है। वह देखकर मैंने मन्दिर को तोड़ दिया, किन्तु धन-रत्न मुझे कुछ नहीं मिला। बाबा, मैं बहुत गरीब हूँ, मैंने बहुत उधार ले रखा है। मुझसे और ये सहा नहीं जाता। किस तरह मेरा उद्धार होगा, कृपया मुझे बता दीजिए।''

साधु ने कहा : ''बेटे तुम्हें रोने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। गुप्तधन तुम्हें ठीक मिलेगा। अभी तुम्हें उसका जानकारी नहीं मिला है, किन्तु भविष्य में धनलाभ करने का कौशल मैं तुम्हें सिखा दूँगा। जो हो चुका, उसकी चिन्ता छोड़ो। अभी तुम एक काम करो, मेरे पास कुछ पैसे हैं, ये लो और मन्दिर के अग्र-भाग का उसके पुराने रूप की तरह पुन: निर्माण करो। समय होने पर फिर तुमसे मुलाकात होगी।''

एक वर्ष बीत गया। कार्तिक पूर्णिमा के तिथि पर दोपहर के समय साधु फिर वहाँ आकर उपस्थित हुए। युवक को देखकर उन्होंने बोला: ''अच्छा ठीक तरह से बताओ कि खाते में क्या लिखा है?''

युवक बोला: ''खाते में लिखा था - 'मन्दिर के अग्र भाग (गुम्बज) में बहुत धन-रत्न रखा हुआ है। कार्तिक महीने के पूर्णिमा तिथि के अवसर पर दोपहर के समय वहाँ खोजने पर वह गुप्तधन मिलेगा।' ''

तभी साधु हँसते-हँसते बोले: ''वत्स, खाते में सब कुछ ठीक ही लिखा है। मिट्टी पर जहाँ मन्दिर के अग्रभाग की छाया पड़ रही है, अभी उस जगह को खोदो।'' उस जगह पर खोदने पर युवक को गुप्तधन का रहस्य मिल गया।

*साधु संतों के मुख से सुने हुए कहानियों के आधार पर:*

**हिन्दी अनुवाद - श्रीसुब्रत कुमार पण्डा**

एक मात्र श्रीगुरु मुखनि:सृत शास्त्रवाणी ही भक्त को कल्याण के पथ पर अग्रसर कर सकती है।

–श्रीबालानंद ब्रह्मचारी